तित्थयर

जैन भवन

आ. श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि ३८२००९

वर्ष : २३ अंक : १२
मार्च २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन

कलकत्ता

वर्ष - २४ अंक - १२, मार्च २०००

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	रुद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश	-	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	१७५
२.	प्राकृत कथा साहित्य	-	प्रो० माधव श्रीधर रणदिवे, सातारा -	१८३
३.	मलया सुन्दरी चरित्र	-		१८९

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :
Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

मेरी आत्मा ही वैतरणी नदी हैं, और आत्मा ही कूटशाल्मली वृक्ष हैं।
आत्मा ही काम - दूधा - धेनु है और आत्मा ही नन्दन वन है।

मनुष्य कर्म से ही ब्राह्मण होता है, कर्म से ही क्षत्रिय होता है,
कर्म से ही वैश्य होता है और कर्म से ही शूद्र होता है।

रूद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश

– *डॉ. शिवप्रसाद सिंह*

उक्त साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा ज्ञात छोटी - बड़ी गुर्वावलियों के परस्पर सभायोजन से इस गच्छ के मुनिजनों के गुरु - शिष्य परम्परा की एक विस्तृत तालिका निर्मित होती है जो इस प्रकार हैः दृष्टता तालिका सख्या - १

तालिका-१

वर्द्धमानसूरी (प्रथम)
|
जिनेश्वरसूरि
|
अभयदेवसूरि (प्रथम) नवांगीवृत्तिकार
|
जिनवल्लभसूरि
|
जिनशेखरसूरि (रुद्रपल्लीयगच्छ के आदि पुरुष)
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि
|
अभयदेवसूरि (द्वितीय) वि० सं० १२७८/ ई० स० १२२२ में जयन्तविजयकाव्य के रचनाकार
|
देवभद्रसूरि

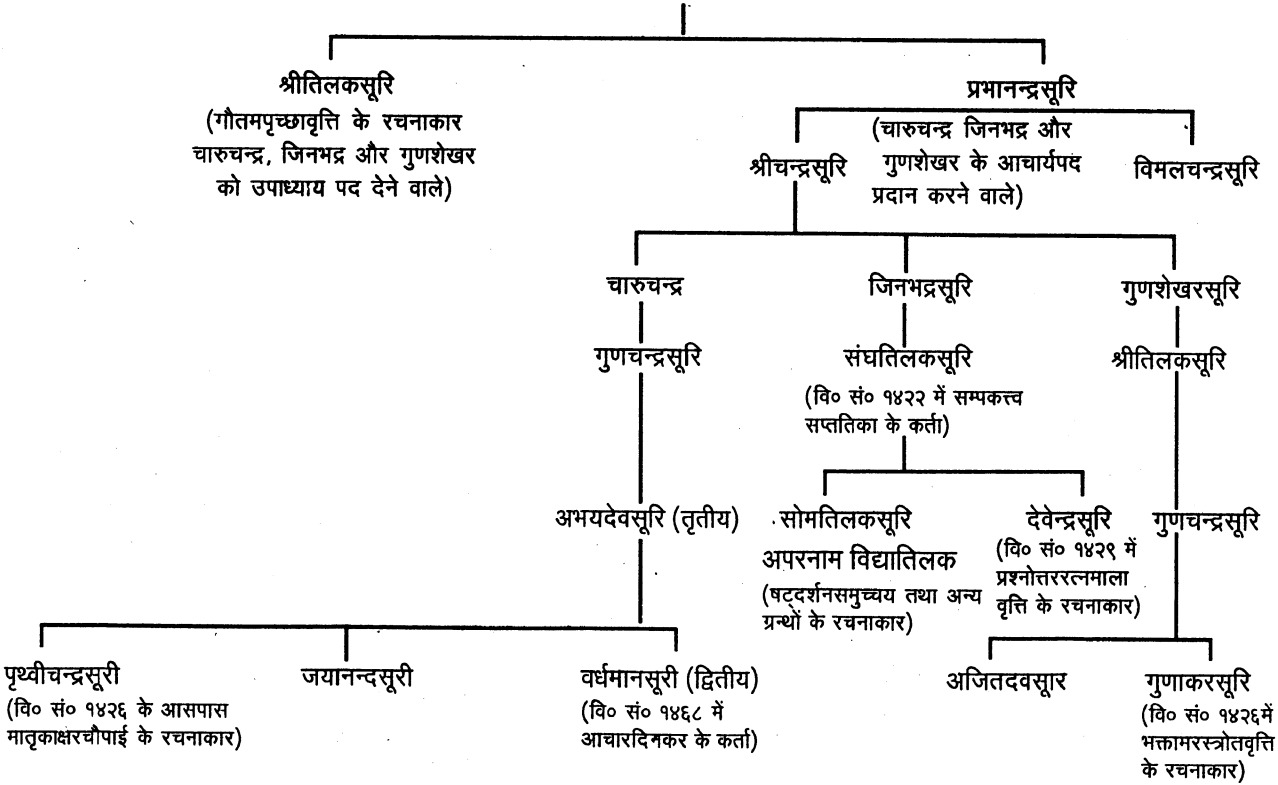
श्रीतिलकसूरि
(गौतमपृच्छावृत्ति के रचनाकार चारुचन्द्र, जिनभद्र और गुणशेखर को उपाध्याय पद देने वाले)
प्रभानन्द्रसूरि
(चारुचन्द्र जिनभद्र और गुणशेखर के आचार्यपद प्रदान करने वाले)
श्रीचन्द्रसूरि
विमलचन्द्रसूरि
चारुचन्द्र
जिनभद्रसूरि
गुणशेखरसूरि
गुणचन्द्रसूरि
संघतिलकसूरि
(वि० सं० १४२२ में सम्पकत्त्व सप्ततिका के कर्ता)
श्रीतिलकसूरि
अभयदेवसूरि (तृतीय)
सोमतिलकसूरि
अपरनाम विद्यातिलक
(षट्दर्शनसमुच्चय तथा अन्य ग्रन्थों के रचनाकार)
देवेन्द्रसूरि
(वि० सं० १४२९ में प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति के रचनाकार)
गुणचन्द्रसूरि
पृथ्वीचन्द्रसूरी
(वि० सं० १४२६ के आसपास मातृकाक्षरचौपाई के रचनाकार)
जयानन्दसूरी
वर्धमानसूरी (द्वितीय)
(वि० सं० १४६८ में आचारदिनकर के कर्ता)
अजितदवसूार
गुणाकरसूरि
(वि० सं० १४२६में भक्तामरस्त्रोतवृत्ति के रचनाकार)

रुद्रपल्लीयगच्छ से सम्बन्द्ध अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१२६०	ज्येष्ठ सुदि २	अभयदेवसूरि	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जलमंदिर पावापुरी	पूरनचन्द नाहर संपा० जैन लेखसंग्रह भाग २, लेखांक २०२९
२.	१३०२	मार्गशीर्ष बदि ९ शनिवार	अभयदेवसूरि के पट्टधर देवभद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	मुनि जिनविजय संपा० प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग २, लेखांक २१०
३.	१३०२	,,	,,	नाभिनाथ की	,,	वहीं, लेखांक २०९ प्रतिमा का लेख
३अ.	१३११	फाल्गुन सुदि १२ शुक्रवार	प्रभानन्दसूरि	नामिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	—	B. Bhattacharya, "The bhale Symbol of the Jains" Berliner Indologische Studien Band 8 Plate XXII 1995
४.	१३२६	—	श्रीचन्द्रसूरि		चिन्तामणि जिनालय बीकानेर	अगरचन्द नाहटा संपा० बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक १६९

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
५.	१३८६	पौष बदि ५ बुधवार	जिनभद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय कुंभारिया	मुनि विशालविजय संपा० कुंभारिया तीर्थ लेखांक ५०
६.	१४२१	माघ बदि ६	जिनहंससूरि के पट्टधर जिनराजसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय उदयपुर	नाहर, पूर्वोक्त भाग२, लेखांक १०५२
७.	१४२१	——	गुणचन्द्रसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख		नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १२७४
८.	१४३२	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	अभयदेवसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय पूना	विजयधर्मसूरि संपा० प्राचीन लेख संग्रह लेखांक ८१
९.	१४५४	——	देवसुन्दरसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर चेलपुरी दिल्ली	नाहर पूर्वोक्त-भाग १ लेखांक ४६१

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१०.	१४७८	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	हर्षसुन्दरसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख		नाहटा पूर्वोक्त लेखांक २५३५
११.	१४८०	वैशाख सुदि ३	हर्षसुन्दरसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जी का वीकानेर	वहीं, लेखांक ६९७
१२.	१४८७	मार्गशीर्ष सुदि ५ सोमवार	हर्षसुन्दरसूरि के शिष्य देव सुन्दरसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख		वहीं, लेखांक १८३५
१३.	१४९४	ज्येष्ठ सुदि १० मंगलवार	जिनहंससूरि	नेमिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वहीं,लेखांक ७७६
१४.	१४९४	माघ सुदि ११ गुरुवार	जयहंससूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	वहीं	वहीं, लेखांक ७७९

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१५.	१४९७	माघसुदि ५ शुक्रवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य सोमसुन्दरसूरि	अनन्तनाथ की प्रतिमा का लेख	वहीं	वहीं, लेखांक ७९७
१६.	१५०१	माघ बदि ६ बुधवार	जिनराजसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वहीं	वहीं, लेखांक ८५१
१७.	१५०१	माघ वदि ६ वुधवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य सोंमसुन्दरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर अलवर	नाहर, पूर्वोक्त भाग १, लेखांक ९९०
१८.	१५०६	ज्येष्ठ सुदि ४	जिनहंससूरि के पट्टधर जिनराजसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय भैंसरोडगढ़	विनयसागर संपा० प्रतिष्ठा लेख संग्रह लेखांक ४०१
१९.	१५०६	माघ सुदि १०	देवसुन्दरसूरि के शिष्य लब्धिसुन्दरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख		नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १६०७

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
२०.	१५०७	वैशाख सुदि १२ शुक्रवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य सोमसुन्दरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर बीकानेर	वहीं, लेखांक ९१४
२१.	१५०८	मार्गशीर्ष बदि २ बुधवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य सोमसुन्दरसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	वहीं	वहीं, लेखांक ९२७
२२.	१५०९	वैशाख सुदि ५ सोमवार	सोमसुन्दरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथजिनालय, बूंदी	विनयसागर, पूर्वोक्त लेखांक ४३८ का लेख
२३.	१५१०	चैत्र बदि ८ बुधवार	हरिभद्रसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय सांगानेर	वहीं, लेखांक ४५४
२४.	१५१०	,,	,,	,,	,,	वहीं, लेखांक ४५५
२५.	१५१०	,,	,,	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	बड़ा मन्दिर नागौर	वहीं, लेखांक ४५६

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान्	संदर्भग्रन्थ
२६.	१५११	माघ सुदि २	देवसुन्दरसूरि के पट्टधर सोमसुन्दरसूरि	नामिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय नवापुरा, सूरत	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त लेखांक २६४
२७.	१५१२	आषाढ़ सुदि ७ रविवार	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख		नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक २२४५
२८.	१५१३	माघ सुदि ६ बुधवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य सोमसुन्दरसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	चौसठिया जी का मंदिर नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त लेखांक ५२० एवं नाहर, पूर्वोक्त, भाग२, लेखांक १३१५
२९.	१५१६	कार्त्तिक बदि २ रविवार	,,	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, माणकतल्ला, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग१, लेखांक १२२
३०.	१५१६	माघ बदि ५	,,	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	बड़ामंदिर, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त लेखांक ५७०

प्राकृत कथा साहित्य

प्रो. माधव श्रीधर रणदिवे, सातारा,

कथा साहित्य और मानवीय जीवन

अति प्राचीन काल से कथासाहित्य का स्थान मानवीय जीवन में महत्वपूर्ण है। कथा ज्ञानविनिमय के अनेक साधनों में सुलभ और सभी का जाना माना साधन है। कथा साहित्य निर्मित का मुख्य उद्देश्य मानवीय जीवन विकसित करने के लिए किया गया है। मानव सब प्राणियों में श्रेष्ठ माना गया है। क्यों कि प्रत्येक कार्य में क्या अच्छा है या बुरा है इसका सब दृष्टि से विचार पूर्वक वह विवेकपूर्ण आचरण कर के आत्मोन्नति कर सकता है। इस लिये कर्म, दर्शन, संयम, तप, दया, क्षमा, सत्य, अचौर्य, चारित्र, दान आदि का मानवीय जीवन में महत्व बताने के लिए कथा का माध्यम लिया गया है। सामान्य जनता कथा से प्रभावित होकर अपना जीवन सुधार सकती है। इसलिये हम देखते है कि प्राचीन धार्मिक साहित्य में कथाओं का विपुलता से प्रयोग किया गया है।

वैदिक, बौद्ध और जैन संस्कृति का कथा साहित्य निर्मित में योगदान

भारतीय कथा साहित्य की निर्मिति में वैदिक, बौद्ध और जैन इन तीन की संस्कृति ने अपने - अपने हिसाब से विशिष्ट कार्य किया है। उन्होंने संस्कृत, पालि और प्राकृत भाषाओं में गद्य, पद्य तथा गद्यपद्यमिश्रित चम्पूस्वरूप में विविध प्रकारों की कथायें लिखी है। ऋग्वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, आदि वैदिक ग्रन्थों में बोधपरक मनोरंजन कथाओं की विपुलता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विविध पुराण, पंचतन्त्र, हितोपदेश, आदि विपुल कथा ग्रन्थ संस्कृत में लिखे हैं। बौद्धपरम्परा ने पुनर्जन्म का आश्रय लेकर जातककथाये लिखी हैं। जात याने जन्म, इसमें भ. गौतम बुद्ध के पूर्वजन्म सम्बन्धी कथायें अतीत की हैं। इन

कथाओं से बौद्ध जनता को मान्य दस पारमिताओं (दान, शील, नेक्खम्म, पञ्ञा,, विरिय, खन्ती, सच्च, अधिष्ठान, मेत्ता और उपेक्खा) में से किसी न किसी सद्‌गुण का बोधिसत्त ने आचरण किया और अन्त में अपने कर्तत्व से बोधि - सर्वज्ञता प्राप्त करके वे बुद्ध हो गये। इस तरह पुरुषार्थ द्वारा जातकट्ठ कथा, धम्मपदट्ठ कथा, विमानवत्थु, पेतवत्थु, आदि ग्रन्थ लोक कथाओं का उत्तम भण्डार है। बौद्ध कथा साहित्य विपुलता से पालि भाषा में लिखा गया है। जैन साहित्य भी धर्मकथाओं का भरभरा समृद्ध भण्डार है। उनमें उज्ज्वल कथारत्न मिलते हैं। जैनियों का अधिकतर कथा साहित्य प्राकृत में है।

हम यहाँ सिर्फ प्राकृत कथा साहित्य का विचार कर रहे है।

कथा प्रकार

कथा साहित्य के कथा और आख्यायिका ऐसे दो प्रकार हैं।

१. **कथा** - कथा कल्पना पर आधारित है। बाण भट्ट की संस्कृत में लिखी 'कादम्बरी' कथा के प्रकार का उत्कृष्ट उदाहरण है। हरिभद्रसूरि की 'समराइच्चकहा', उद्योतनसूरि की 'कुवलयमाला' प्राकृत कथाओं का आदर्श उदाहरण है।

२. **आख्यायिका** - आख्यायिका ऐतिहासिक या पौराणिक घटनाओं पर कल्पना का स्वैद उपयोग कर के लिखी जाती है। कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य का 'कुमारपालचरित' आख्यायिका का आदर्श उदाहरण है।

कथा और आख्यायिका जनमनोरंजन के लिए लिखी जाती हैं। ये कथायें गद्य में, पद्य में या गद्यपद्यमिश्रित चम्पू में संस्कृति, प्राकृत या संस्कृत - प्राकृत में लिखी गयी है।

आगम में अकथा, विकथा और कथा ये तीन कथाभेद बताये हैं। हरिभद्रसूरि ने समराइच्चकहा की भूमिका में निम्न तीन प्रकार की कथायें दी हैं-

१. **दिव्यकथा** - देवदेवताओं की कथायें।

२. **मानुष कथा** - मानव की कथाये।

३. **दिव्यमानुष कथा** - देव और मानव की कथायें।

फिर हरिभद्रसूरि ने कथाओं के दूसरे चार प्रकार दिये हैं-

१. **अर्थकथा** - द्रव्यार्जन के विषय में लिखी गई कथायें।

२. **कामकथा** - वैषयिक सुखोपभोग के विषय में श्रृंगारिक प्रणय कथायें।

३. **धर्मकथा** - सम्यकत्व प्राप्ति के लिए तथा संसार जंजाल से विरक्त होकर आत्मकल्याण करने के लिए लिखी गई कथायें।

४. **संकीर्ण कथा** - धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थ साध्य करने के लिए लिखी गई मिश्रकथायें।

धवला टीका में अक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी और निर्वेदनी नाम के चार कथाप्रकार दिये है।

उद्योतनसूरि ने शैली की दृष्टि से कथाओं के सकलकथा, खण्डकथा, उल्लापकथा, परिहासकथा और संकीर्णकथा ऐसे पाँच प्रकार दिये हैं।

प्राकृत साहित्य में धर्मकथायें तथा मिश्र या संकीर्ण कथायें अत्याधिक मिलती हैं।

आगमकथायें - नायधम्मकहाओ, सूयगडंगं, विवागसुत्तं, आदि जैन आगम ग्रन्थों में दृष्टान्त, उपमा, रूपक, संवाद, और लोक प्रचलित वार्ता द्वारा कथायें दी हैं। कुम्भणायं, सुंबकणायं, आदि नायाधम्मकहाओ की कथायें दृष्टान्त के द्वारा संयम और आत्मा का कर्मबन्ध और मुक्ति के स्पष्टिकरणार्थ दी हैं। सम्यकत्व के लिए जिनपालित और जिनरक्षित की पाँचवी कथा दी हैं। महाव्रतधारी शिथिलाचारी, दृढव्रतधारी मुनियों के स्पष्टिकरणार्थ कथाएँ दी गयी है।

टीकाग्रन्थों की कथायें - आगमग्रन्थों पर जो टीकायें लिखी गयी हैं वे टीकायें कथा साहित्यका अक्षय भण्डार कहा जाता है। यह सत्य है कि ये टीकायें संस्कृत में लिखी गई है। लेकिन कथा आदि के स्पष्टिकरणार्थ टीकाकारों ने प्राकृत में कथायें लिखी हैं। हरिभद्रसूरि ने आपरंचकवृत्ति और दशवैकालिकवृत्ति में प्राकृत कथाओं का मार्मिक उपयोग किया है। दसवेयालिकसुत्तं के दूसरे अध्याय के न सा महं नाहं पि तीसे के स्पष्टिकरणार्थ दी गई कथा बड़ी मार्मिक है। नवविवाहित तरुण ने

आचार्य के प्रवचन से प्रभावित होकर मुनिदीक्षा ली। आचार्य ने उसे उसकी पत्नी के बारे में उपर के वचन दोहराने को कहा था। कुछ समय बीत गया। दूसरे सेठ साहुकार का सुखी संसार देख कर उसके मन में आया, मुझे मेरे पत्नी के पास जाकर सुखी संसार करना है। वह किसी को कहे बिना अपनी पत्नी के गाँव गया। कुएं पर आई हुई स्त्री को पत्नी के बारे में पूछा। वह उसकी पतिव्रता और विरक्त बनी हुई उसकी ही पत्नी थी। उसने पति को पहचान लिया। लेकिन उसे मुनिधर्म में स्थिर करने के लिये कहा। उस स्त्री के पति ने मुनिदीक्षा लेने के बाद उसने दूसरे पुरुष से विवाह किया। यह सुनकर उसे आचार्यश्री के वचन की सत्यता मालूम हुई और आचार्य के पास जाकर प्रायश्चित लेकर उसने उग्र तपाचरण किया। इसीतरह हरिभद्रसूरि की सब कथायें मार्मिक और संवेगजनक हैं।

उत्तरज्झयणसुत्तं के टीकाकार शान्तिसूरि ने शिष्याहिला बृहद्वृत्ति और नेमिचन्द्रसूरि या देवेन्द्रगणि की सुखबोधालघुवृत्ति प्राकृत कथाओं के बारे में प्रसिद्ध हैं। देवेन्द्रगणि ने शान्तिसूरि के समान संक्षेप में कथा न दे कर विस्तार पूर्वक कथायें लिखी हैं। उनमें 'अंगहदत्तचरियं', 'बण्मदत्तकहा', 'कविलकहा', आदि कथायें आकर्षक शैली में लिखी हैं।

देवेन्द्रगणि ने सिर्फ ५२ गाथाओं में आख्यानमणि कोश में कथाओं का निर्देश किया है। आम्रदेव ने (१२वी शताब्दी) उन गाथाओं पर १४००० श्लोक प्रमाण आख्यानमणिकोश वृत्ति नाम की प्रदीर्घ टीका लिखी। मूल गाथा में निर्दिष्ट नायक और नायिका पर १८७ कथायें लिखी हैं। उनमें कुछ संस्कृत श्लोक और अपभ्रंश गाथाओं का विपुल उपयोग किया है। तीन कथाये अपभ्रंश में लिखी है और एक कथा संस्कृत में दी है। सभी कथायें मन को आकर्षित करने वाली हो गई हैं।

अनुयोगद्वारसूत्र के वृत्तिकार मलधारी हेमचन्द्र ने उपदेश माला प्रकरण नाम का कथाग्रन्थ लिख कर कथा साहित्य में अनोखा स्थान प्राप्त किया है। दान, शील, तप और भावना ऐसे इस ग्रन्थ के चार भाग हैं। इस ग्रन्थ में जैनतत्वोपदेश सम्बन्धी कितनी महत्वपूर्ण धार्मिक और

लौकिक कथायें ग्रंथित हैं।

इसी तरह आगम ग्रन्थों में और उनकी टीकाओं में वर्णित धार्मिक और लौकिक कथाओं के आधार पर उत्तरकालीन प्राकृत कथासाहित्य विकसित और वृद्धिंगत हो गया है।

प्राकृत कथासाहित्य का समय - प्राकृत कथासाहित्य का समय चौथी शताब्दी से १६वीं शताब्दी तक माना जाता है। ७वीं से १०वीं शताब्दी तक बहुत ही कम कथाग्रन्थ लिखे है। चरित्रात्मक ग्रन्थों में विमलसूरिकृत पउमचरियं (चौथी शताब्दी), संघदास गणिकृत वसुदेव हिंडी (छठी शताब्दी) हरिभद्रसूरि कृत समराइच्चकहा (७वी शताब्दी) नेमिचन्द्रगणि की तरंगवई (१०वीं शताब्दी) तथा उपदेश पर ग्रन्थों में उपदेशपद, उपदेशनाम माला, आदि ग्रन्थों का समावेश होता है। ११वी शताब्दी में श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय में अभूतपूर्व जागृति हो गई। जैन धर्म को राजाश्रय मिल गया। तब जैनाचार्यों ने लोकरुचि के अनुसार अपनी धर्मकथायें श्रंगाररस से रोचक और लोकोपयोगी बनायी।

अनुपलब्ध कथाये - नागहास्तिसूरि की गुरुकृपा से औषधियों से पादलेप करके आकाशगामिनी विद्या जिन्होनें प्राप्त की थी इसीलिए नागेन्द्र का नाम पादलिप्त पड़ा। उन पादलिप्ताचार्य ने पहली शताब्दी में तरंगलोला नाम की श्रृंगार प्रधान प्रदीर्घ प्रणय कथा लिखी थी। दुर्भाग्य से वह कथा आज उपलब्ध नहीं है। लेकिन मौखिकरूप से यह कथा लोग जानते थे। लगभग एक सहस्र वर्ष के बाद श्रीनेमिचन्द्रगणि ने १६४८ प्राकृत गाथाओं में तिरंगवई नाम की वह प्रेमकथा लिखी। तदनन्तर भद्रेश्वरसूरि ने (११वी शताब्दी) इसका ४२५ प्राकृत गाथाओं में संक्षेप भी किया है। इस कथा में चक्रवाक, चक्रवाती और भिल्ल शिकारी इन तीन जीवों के पुनर्जन्म की कथा बड़ी रोचक शैली से दी है।

लगभग दूसरी शताब्दी में गुणाख्य ने पैशाची प्राकृत भाषा में अभूतपूर्व बृहत्कथा की रचना की। यह कथा पैशाची प्राकृत में लिखी गई, इसलिये राजश्रय नहीं मिलने से गुणाख्य ने अपनी बृहत्कथा की एक - एक ताड़पत्री अग्नि में जला दी।

इसीतरह मलयवई मगइसेणा नाम की प्रणयकथाओं का हमें

सिर्फ उल्लेख ही मिलता है। वही बात हुई जिनेश्वरसूरि की (११वी शताब्दी) निर्वाणलीलावई प्रदीर्घ कथा की। लेकिन इस कथा का संस्कृत श्लोकाबद्ध अनुवाद प्राप्त है। सिंहराज और लीलावतीरानी की जन्मजन्मान्तर की यह रोचक कथा है।

कुछ प्राकृत कथा ग्रन्थ -

प्राकृत कथा साहित्य का भण्डार इतना विपुल और समृद्ध है कि सिर्फ उल्लेख करने के अतिरिक्त हम उनका परीक्षण नहीं कर सकते। तो भी संक्षेप में कुछ प्राकृत कथा ग्रन्थों की जानकारी निम्नप्रकार दी जा सकती है।

पउमचरियं - नागेन्द्र वंशीय दिनकर सूरि के शिष्य विमलसूरि ने (तीसरी या चौथी शताब्दी) पउमचरियं नाम का ११७ पर्वों में महाकाव्य लिखा। राम का मुख प्रफुल्लित पद्म के समान होने से उनका पद्म ऐसा दूसरा नाम भी रखा गया) विमलसूरि ने इस महाकाव्य में विद्याधर राक्षस और वानरवंश का परिचय दिया है। मेघवाहन राजा ने लंका और दूसरे द्वीपों का रक्षण किया, इसलिये रक्ष् - रक्षति इति राक्षस, ऐसे राक्षसवंश में उज्जवल चारित्रशील तथा महापराक्रमी रावण महाराज हुए। उनके समग्र जीवन ग्रन्थ में सीताहरण यह एक ही पृष्ठ दूषित है, इसलिए संसार में उन्होंने दुर्गति प्राप्त की। इसी तरह हनुमान वानरवंशीय विद्याधर थे। उनके मुकुट और ध्वज पर वानर का चिन्ह था और वे वानरीविद्या में तरबेज थे।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

काष्ठ स्तंभ में चम्पकमाला

इस काष्ठ को चारों तरफ से इस प्रकार मजबूत जकड़ कर बांधने का क्या कारण होगा? क्या यह अन्दर से फांका तो नहीं होगा? इसे गोला नदी में किसने बहा दिया होगा? क्या इतना बड़ा काष्ठस्तंभ अपने आप ही बह आया होगा? इत्यादि अनेक प्रकार के मनोगत तर्क वितर्क करते हुए राजा बीरधबल ने, अपने सेवकों को उसके बन्धन तोड़ डालने का हुक्म दिया। बन्धन तोड़ते ही उस काष्ठ के, सीप संपुट के समान दो भाग मालुम हुए। ऊपरी भाग दूर करने पर उसके बीच में रही हुई अर्धजागृत अवस्था में रानी चंपकमाला दिखी। उसके शरीर पर चंदन का बिलेपन किया हुआ था। उसके शरीर से कस्तूरी आदि सुगंधी द्रव्यों की महक आ रही थी। उसके कंठ में सच्चे मोतियों का अमूल्य सुन्दर हार शोभ रहा था और नेत्रों में निद्रा छाई हुई थी।

अकस्मात् उस काष्ठ विवर के अन्दर निद्रालु अवस्था में महारानी चंपकमाला को देखते ही महाराजा बीरधबल और तमाम लोगों के मुख से एकदम हर्षध्वनि हो उठी। अहा! रानी चंपकमाला यहां कैसे? सबके चेहरे विकसित हो गये। और वहां पर रहे हुए तमाम स्त्री पुरुषों में जो शोक की प्रचंड घटा छाई हुई थीं वह नष्ट हो गयी और हर्ष आनन्द का प्रचण्ड भानु प्रकाशित हो उठा। इस हर्ष के साथ ही महाराजा बीरधबल विचार में पड़े कि जिस रानी के मृतक को शिविका में डाल कर यहां लाए हैं वह असली रानी है या यह? अथवा कहीं मैं यह स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ? अथवा वही जीवित रानी डर के कारण इस काष्ठ विवर में तो नहीं आ घुसी है? परन्तु ये सब बातें असंभवसी प्रतीत होती हैं। इसमें वास्तविक सत्य क्या है? यह जानने के लिए महाराजा बीरधबल ने तुरन्त

ही अपने सेवकों को आज्ञा दी कि जल्दी शिविका को देखो, उसमें रानी का मृतक शरीर है या नहीं? राजा का हुक्म होते ही राज पुरुष शिविका देखने के लिए दौड़े। इतने ही में शिविका में रहा हुआ शव हाथ से हाथ मसलता हुआ, दांतों से दांत पीसता हुआ, अरे! मैं ठगा गया इस प्रकार शब्द बोलता हुआ तमाम जनता के प्रत्यक्ष देखते हुए आकाश में उड़ गया।

यह घटना देखते ही तमाम लोग भयभीत हो कांपने लगे। विस्मय और आनन्द से पूर्ण हृदय वाला राजा जनता को आश्वासन देता हुआ बोला - सज्जनों! इस वृत्तान्त के वास्तविक रहस्य को हमारे अन्दर से कोई भी नहीं जानता, परन्तु काष्ठस्तंभ में से निकली हुई रानी शायद इस रहस्य को प्रगट करेगी। यों कह कर उन्होंने रानी के तरफ देखते हुए यह प्रश्न किया कि प्रिये! यह क्या घटना है? क्या इस रहस्य को तुम बता कर हम सब की शंका दूर करोगी?

राजा के पूर्वोक्त वचन कान में पड़ते ही रानी चंपकमाला अर्धनिद्रा से जागृत हो महाराजा को अपने सन्मुख खड़ा देख कर उनके मुख मंडल की तरफ एक टक से देखने लगी। नजर से नजर मिलते ही रानी के नेत्रों से अश्रु की धारा बहने लगी। इस समय दोनों दंपत्ती को जो आनन्द प्राप्त हुआ वह अकथनीय था। कुछ देर तक अनिमेष दृष्टि से देख कर हर्ष के आंसुओं से विरह की अग्नि को बुझाती हुई रानी स्वयं राजा से पूछने लगी। स्वामिन्! आज इस नदी के किनारे पर आप किस लिए पधारे हैं? ये तमाम लोग यहां पर किस लिये इकट्ठे हुए हैं? वह सामने चिता किसके लिये बनाई गई है? यह मृतक को उठाने वाली शिविका दिखायी पड़ती है, क्या कोई मनुष्य मर गया है?

राजा अधीर होकर बोला - देवी! तुम्हारे पूछे हुए तमाम प्रश्नों का जबाब मैं पीछे दूँगा। पहले तुम मुझे अपना संपूर्ण वृत्तान्त सुनाओ। प्रिये! तुम कहां चली गई थीं? इतने समय तक कहां रही? घुण के समान इस काष्ठस्तंभ में किस तरह घुसी? कंठ में रहा हुआ यह हार तुम्हें किसने दिया? और इस नदी के प्रवाह में किस तरह बह आई? यह सब वृतान्त

सुनाकर हमारी उत्सुकता को दूर करो।

रानी ने मधुर स्वर से कहा - अगर आप को प्रथम मेरा ही वृतान्त सुनना है तो बड़ - वृक्ष शीतल छाया में चलो। वहां जरा विश्रांति लेकर मैं शांत चित्त से इस विचित्र घटना का सर्व वृतान्त सुनाऊंगी। रानी के इस उत्तर से वहां रही हुई तमाम जनता को बड़ा हर्ष हुआ, और राजा रानी आदि सब लोग नजदीक में रहे हुए उस बट वृक्ष की छाया में यथोचित स्थान पर जा बैठे, तथा इस दुर्घटना का वृत्तान्त सुनने के लिए उत्सुक हो रानी के मुखमंडल की ओर देखने लगे।

प्रियदेव! यह बात तो आपको मालूम ही थी कि मेरा दाहिना नेत्र फड़कता था। उस अशुभ निमित्त से मुझे किसी जगह पर भी शान्ति प्राप्त न हुई। आप के गये बाद मैंने वन उपवन, बगीचे आदि में शांति प्राप्त करने के लिए बहुत ही प्रयत्न किया परन्तु कहीं पर भी चित्त स्थिर न होने से, मैं वापिस महल में आ गई और दासी वेगवती को मैंने फूल पत्र लेने के लिये भेज दिया। उस समय मेरी आंखों में कुछ निद्रा भरने लगी था, अतः मैंने आराम पाने के लिए पलंग का आश्रय लिया। निद्रागत हो जाने पर तुरन्त ही मुझे किसी दुरात्मा ने उठा लिया। महल से उठा कर मुझे किसी एक पहाड़ के शिखर पर रख दिया गया। मुझे उठा लाने वाला दुष्ट व्यक्ति शीघ्र ही कहीं अन्यत्र चला गया।

इस समय भय के मारे मेरा सारा शरीर कांपने लगा। वह पहाड़ी प्रदेश यद्यपि रमणीय था तथापि मुझे उस समय वह बहुत ही भयानक प्रतीत होता था। उस पर्वत पर रहे हुए चन्दन वृक्षों का सुगन्धित परिमल पवन के साथ मेरे शरीर को स्पर्श करता था। तथापि वह मुझे दुःखद मालुम होता था। चारों तरफ दृष्टि घुमाती हुई मैं उस शिलातल्प से उठी। मैंने सावधान होकर सब तरफ दूर दूर तक देखा, परन्तु वहां पर कहीं मनुष्य की छाया तक भी न दिखायी पड़ती थी। मात्र, सिंह व्याघ, रींछ और उसी तरह के अन्य विकराल प्राणियों के शब्द सुंनाई देते थे। ऐसी भयंकर परिस्थिति में साहस धारण कर मैं एक ओर चल पड़ी।

मैं चलते समय विचार करती जाती थी कि कहां वह मेरी रमणीय चंद्रावती नगरी और कहां यह निर्जर प्रदेश। हा मेरे प्राण वल्लभ कहां रहे? और अब मुझे उनका किस तरह मिलाप होगा ? इस शत्रु ने मेरा अपहरण किस लिये किया? इस संकट से अब मैं किस तरह मुक्त होऊंगी? इस भयानक जंगल में मैं किस तरह रह सकूंगी। मेरे बाद वहां पर मेरे प्राण प्यारे की क्या दशा हुई होगी? इत्यादि विचारों की उलझन में कदम - कदम पर ठोकरें खाती हुई मैं कितनी दूर तक उसी दिशा में चली गई।

इतने ही में मेरे पुण्य के उदय से सामने एक विशाल भव्य जिनमन्दिर नजर आया। उस मन्दिर के द्वार खुले हुए थे, इसलिए धैर्य से मैंने उसमें प्रवेश किया। अन्दर जा कर देखा तो वृषभ लांछन से मालुम हुआ कि ऋषभ देव प्रभु की सुन्दर और शान्त मूर्ति विराजमान है। प्रभु की प्रतिमा के दर्शन से मुझे उस महासंकट में भी कुछ शांति मिली। मंदिर की प्राप्ति से मेरी अनेक आशायें सजीवनसी हो उठीं। मानो मैं तमाम दुःखों को भूल गई हूँ, ऐसी मेरे मन में हिम्मत और शान्ति प्राप्त हुई। ऐसे निर्जन जंगल में और आपत्ति के समय में देवाधि देव का दर्शन हुआ यही मेरे भविष्य के शुभ सूचक की निशानी थी। मैं उस संकट हरण शांतिकर, महाप्रभु की एकाग्र चित से स्तुति करने लगी।

हे अनाथों के नाथ! पर दुःख भंजन ! कृपा के समुद्र वीतराग देव! मैं आप की शरण में आई हूँ। हे, शरणागत हितोपदेश से अनादि कर्म बन्धन से मुक्त हो भव्यजीव परम पद को प्राप्त करते हैं। हे प्रभो! आपके दर्शन की प्राप्ति अन्धकार में दीपक, मरु भूमि में सरोवर, शुक्ल पहाड़ पर कल्पवृक्षों की घटा, और समुद्र में जहाज प्राप्त के समान आनन्द दायक हैं। हे भगवन! मेरे बाह्याभ्यन्तर दुःखों का अन्त करो।

इस तरह शांत चित्त से भगवान की स्तुति करके जब मैं मंदिर से बाहर आई तो वहां पर मुझे दिव्य रूप धारण करने वाली एक स्त्री मिली। वह मेरे पास आकर प्रसन्नता से बोली-सुन्दरी! तुझ पर इस प्रकार की विपत्ति के बादल आने पर भी जिनेश्वर भगवान पर तेरी ऐसी अटल भक्ति और अटूट धर्म परायणता देखकर ऋषभ देव प्रभु के शासन

की अधिष्ठाता देवी मैं तुझे सहाय करने के लिए प्रगट हुई हूँ। प्रभु के इस मंदिर के नजदीक ही रहने वाली, और देव मंदिर का रक्षण करने वाली, मैं चक्रेश्वरी देवी हूँ। इस मलयाचल पहाड़ के ऊपर मेरा भुवन होने से मुझे लोक मलया देवी भी कहते हैं। मेरे ही धर्म को पालन करने वाली बहन! तू धैर्य धारण कर। भय को त्याग दे। मैं तेरा रक्षण करने के लिए आई हूँ। इस प्रकार कह कर आदर पूर्वक उसने मेरे हाथ में सुगंधित कुछ चंदन के टुकड़े दिये।

मलया देवी का मेरे पर वात्सल्य देख कर मुझे बड़ा धैर्य प्राप्त हुआ। मैंने देवी से कहा, हे देवी! मुझे कौन और किस लिए यहां हरण करके लाया हैं? मुझे अब अपने स्वामी का मिलाप होगा या नहीं? देवी ने कहा - धर्म बहन! तेरे पति बीरधवल का वीरपाल नामक एक छोटा भाई था। राज्य की इच्छा से उसके राजा को मार डालने के लिए तमाम प्रयत्न निष्फल हुए। एक दिन उस निष्ठुर ने राजा को मारने के लिए महल में प्रवेश किया, और राजा पर शस्त्र का वार किया। परन्तु राजा ने सावधान होकर, उसके वार को चुका दिया और तलवार के एक ही प्रहार से उसे जमीन पर गिरा दिया। बुरी तरह घायल होकर बीरपाल अपने पाप का पश्चात्ताप करता हुआ कुछ शुभ भावना से मृत्यु पाकर इसी पर्वत पर मेरे परिवार में प्रचंड शक्ति वाला भूत जाति में देव पैदा हुआ है।

उसने ज्ञान से अपना पहला भव देखा और वैर याद कर राजा से बदला लेने के लिए उसके छिद्र देखता हुआ उनके पीछे फिरने लगा परंतु राजा का पुण्य प्रबल होने से उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सका। तब उसने विचार किया कि राजा का रानी चंपकमाला पर गाढ़ प्रेम है। उसके जैसा स्वाभाविक प्रेम अन्य किसी पर भी नहीं मालूम होता है। यदि रानी को मार दिया जाय तो प्रेम के बन्धन में बंधा हुआ राजा स्वयं ही मर जायेगा। इस तरह से मैं अपना बदला ले सकता हूँ।

हे सुन्दरी! इसी विचार से भूत देव तेरे पीछे फिरने लगा। आज तुझे शयनगृह में एकाकी निद्रावस्था में देखकर इस पर्वत पर उठा

लाया। पुण्य की प्रबलता और आयुष्य लम्बा होने से वह तुझे मार नहीं सका। हे धर्म सहोदरी? अब तुझे घबड़ाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि तुम्हारे ही शुभ कर्म की प्रेरणा से मैं तुझे आ मिली हूँ। अब से तेरे पुण्य कर्म का उदय हो गया है और वही तेरी रक्षा करेगा और तुझे इष्ट प्राप्ति कराने में समर्थ होगा। मेरा समागम भी तुम्हारे उस पुण्य के योग से ही हुआ है। इस लिये अब तुझे जिस वस्तु की इच्छा हो वह तू मुझे बतादे जिससे कि मेरा समागम तेरे लिए सफल हो।

स्वामी! मैंने मलया देवी से कहा हे महादेवी! यदि आप सचमुच ही मेरी सहायक हैं तो मुझे पुत्रादि संतति नहीं है। जिसके बिना हमारा विशालराज्य भी निराधार है। गृहस्थियों का गृहसंसार पुत्रादि के बिना शोभा नहीं पाता। अतः प्रसन्न होकर मुझे पुत्र प्राप्ति का वरदान दो।

यह बात सुनते ही राजा उत्सुक हो बीच में ही बोल उठा - हे प्रिय वल्लभे! उस परोपकारी देवी ने तुझे इस बात का क्या उत्तर दिया? रानी बोली - स्वामी ! उस देवी ने खुश होकर मुझे कहा - भद्रे ! तुझे पुत्र - पुत्री रूप एक युगल (जोड़ा) थोड़े ही समय में प्राप्त होगा। इतने दिनों तक तेरे पति के दुश्मन इस व्यन्तर देव ने ही तुम्हारे संतति का निरोध किया था। अब मैं उस अपने सेवक व्यन्तर देव को तुम्हारा नुकसान या तुम्हें हैरान करने से रोक दूंगी।

यह वचन सुनकर राजा के हृदय में हर्ष का पार न रहा। उसने रानी की बहुत ही प्रशंसा की और कहा हे साध्वी, प्रिये! तुझे बड़ी श्रेष्ठ बुद्धि सूझी! तुमने बहुत अच्छा वरदान मांगा। इससे तूने मेरे वंश का उद्धार किया। और मेरे हृदय की चिन्ता भी दूर कर दी। प्यारी! तेरे सिवा मेरे दुःख में हिस्सा लेने वाला और कौन हो सकता है? प्रिये! ऐसी दुःखी अवस्था में भी जो तुझे संतति संबन्धी चिन्ता दूर करने की बात याद आई, यही हमारे भाग्योदयका सूचक प्रमाण है।

क्या मलयादेवी ने और भी कुछ उपकार किया है? रानी ने जबाव दिया जी हां, यही लक्ष्मी पुंज नामक हार उसी महादेवी ने अपने हाथ से मेरे गले में डाला है। और उसने कहा है कि यह दुर्लभ हार महाप्रभावशाली है। गले में निरन्तर धारण करने से शुभ फल दायक होता है। इस हार

के प्रभाव से तुझे प्रभावशाली संतति प्राप्त होगी, और नित्य ही तुम्हारे मनोरथ पूर्ण होंगे।

हे स्वामिनी! इसके बाद मैने मलयादेवी से पूछा - जिस देवने मुझे इस पहाड़ पर ला छोड़ा है वह इस समय कहाँ गया? देवी ने कहा भद्रे! तुम्हे इस पर्वत पर छोड़ कर वह देव वापिस चन्द्रावती नगरी में ही गया है और तेरे स्थान में तेरे ही जैसा एक मृतक शरीर बना कर गुप्त रूप से वहाँ पर ही रहा हुआ है। तेरा पति तेरे सजीवन शरीर को अकस्मात् निर्जीव देखकर इस समय जिस दुःख का अनुभव कर रहा है उसका मैं कथन नहीं कर सकती हूँ। राजा को उस व्यन्तर देव की माया का पता नहीं लग सका। इसी कारण वह उस बनावटी मुर्दे को रानी समझ कर महान् विलाप कर रहा है।

आपका दुःख सुनकर मैं कांप उठी मैंने तुरन्त ही देवी से प्रश्न किया कि मेरे स्वामी मेरे वियोग में जीवित रहेंगे या नहीं? और वे मुझे कब मिल सकेंगे? देवी ने कहा - भद्रे! सात पहर के बाद दुःसह्य पीड़ा को सहता हुआ राजा, तुझे जीवित मिलेंगे। मैं देवी से यह पूछना ही चाहती थी कि वे मुझे कब मिलेंगे। इतने ही में दासी सहित आकाश मार्ग से वहाँ पर एक विद्याधरी आ पहुँची। उस के आते ही मलयादेवी मेरे पास से अकस्मात् अदृश्य हो गयी।

जो होता है वह अच्छे के लिए

मुझे वहां पर अकेली देख कर वह विद्याधरी मेरे पास आई, और विस्मय चित्त से वह मुझे पूछने लगी कि हे भद्रे! इस निर्जन पहाड़ पर सुन्दर रूपवाली तू अकेली कौन हैं? उसके उत्तर में मैंने उसे तमाम वृत्तान्त कह सुनाया। मेरी बात सुनकर खेद पूर्वक वह विद्याधरी बोलने लगी। अहो! विधि की विचित्रता! ऐसी रूपवती, उत्तम कुल में पैदा होने वाली, और राजा की रानी होती हुई भी निर्जन पहाड़ पर ऐसे संकट में पड़ी है।

हे शुभे ! मैं तुझे इसी वक्त तेरी चन्द्रावती में छोड़ आती परन्तु मुझे

इस पहाड़ पर विद्या सिद्ध करनी है। अगर मैं इस वक्त उस विद्या का आराधन न करूं तो फिर वह विद्या सिद्ध न हो सकेगी। मैं अब दोनों तरफ से संकट में पड़ गयी हूँ। इसीलिए मैं तुझे इस समय तेरी नगरी में नहीं पहुँचा सकती। इस समय मेरा पति भी मेरे पीछे आने वाला है। वह ऐसा सुन्दर रूप देख कर तेरा शील खंडित करेगा, या वह तुझे सदा के लिये पत्नि बना कर रक्खेगा, तो मुझे भी सौतन का महान् संकट भोगना पड़ेगा, इस लिये हे भद्रे! मैं तुझे अच्छी तरह मेरे साथ चल किसी जगह में छिपादूं।

इस प्रकार कह कर वह बड़े जोशीले प्रवाह में बहती हुई मुझे एक नदी के किनारे ले गयी । उस समय भय के मारे मेरा शरीर कांपने लग गया था। मुझे शंका होती थी कि क्या यह विद्याधरी मुझे मार डालेगी? अथवा वृक्ष पर लटका देगी? या नदी प्रवाह में धकेल देगी!

नदी के किनारे पर एक सूखा हुआ बड़ा लक्कड़ पड़ा था। विद्याधरी ने अपनी विद्या शक्ति से उस लक्कड़ के दो लम्बे विभाग किये। एक मनुष्य अच्छी तरह उसमें समा जाय इतने प्रमाण में उसे पोला किया। फिर कपूर, कस्तूरी आदि अनेक प्रकार के सुगन्धी द्रव्यों से मेरे शरीर पर विलेपन कर के वह विद्याधरी मुझ से बोली - हे भद्रे! इधर आ। मैं तेरे शील की रक्षा करूं। यों कह कर मुझे उस लक्कड़ के विवर में सुला कर उसने मेरे ऊपर उस काष्ठ की दूसरी फाड़ ढक दी। इसके बाद क्या हुआ सो गर्भावास में रहे हुए के समान मुझे कुछ भी खबर नहीं।

पूर्व पुण्य के उदय से यह काष्ठ यहाँ पर ही आ पहुँचा और आपने मुझे उसमें से निकाल लिया, बस यही मेरा सर्व वृत्तान्त है।

राजा ने भी रानी के पूछने पर यहां पर सबके एकत्रित होने का तमाम हाल कह सुनाया। राजा वीरधवल सुबुद्धि प्रधान की तरफ नजर कर के बोला, मंत्रीश्वर! उस विद्याधरी ने रानी को इस काष्ठविवर में क्यों डाला होगा? और यह काष्ठस्थम्भ यहां कैसे आ गया?

मंत्री बोला महाराज! मेरा अनुमान है कि सपत्नि होने की शंका से विद्याधरी ने रानी को इस काष्ठविवर में डाला होगा और काष्ठ को मजबूत बन्धनों से बाँध कर उस तरफ से आने वाली इस गोला नदी के

प्रवाह में इस काष्ठस्थंभ को बहा दिया होगा। यह काष्ठस्थंभ नदी के प्रबल प्रवाह में बहता हुआ हमारे पुण्य के उदय से यहाँ आ पहुँचा है।विद्याधरी का चाहे जो आशय हो तथापि उसका किया हुआ प्रयत्न हमारे लिये तो सुखरूप ही निकला है। रानी से जो देवी ने कहा था कि तुम सात पहर के बाद अपने स्वामी से मिलोगी वह देवी का वाक्य सत्य ही हुआ।

राजा - हाँ देवी का वचन तो अन्यथा हो ही नहीं सकता, परन्तु उस मायावी व्यन्तर देव का प्रपंच हमें कुछ भी मालूम न पड़ा कि जिसने थोड़े ही समय में राज्यवंश को क्षय करने का प्रयत्न किया था। हम पर मलयादेवी ने महान् उपकार किया है। उसकी कृपा से कुल में कुशलता, और पुत्र पुत्री का वरदान मिला तथा उस व्यन्तर देव का उपद्रव भी नष्ट हुआ। सच पूछो तो इन तमाम बातों का कारण रानी का अपहरण ही है। जिस प्रकार कड़वी औषधी से तुरन्त ही रोग दूर हो जाता है। वैसे ही रानी का दुखदाई अपहरण अन्त में हमें सब तरह सुखरूप ही हुआ।

काष्ठस्थंभ की उन दोनों फालियों को गोला नदी के भूषण रूप देवी के मंदिर के पास में रखवा दिया। मध्याह्न का समय हो गया था, भूख से रानी का मुख कुम्हला रहा था। प्रधान मन्त्री ने कहा - कृपानाथ ! भोजन का समय बीत रहा है। क्षुधा से क्षाम कुक्षीवाली महारानी भी कुम्हलायी हुई दिखायी पड़ती है और आप भी कल से अन्न जल रहित है। अतः अब आप शीघ्र ही शहर में चल कर स्नान भोजन करके दुःख को तिलांजली दें। प्रधान के वचन सुनकर महाराज वीरधवल शहर में प्रवेश करने के लिये तैयार हो गये। प्रजाजनों ने शहर के रास्ते और बाजार सजा दिये थे। राजा रानी दोनों हाथी पर बैठ कर राज महल को चल दिये।

इस समय अनेक बाजों के नाद से आकाश गूंज रहा था। चारण लोग वरदावली बोल रहे थे। महाराज मांगलिक और आशीर्वाद के शब्द सुनते हुए तथा याचकों को दान देते हुए राजमहल में आ पहुंचे। महल में आकर मन्त्री सामंत और नागरिकादि सर्व जनों को संतोषित कर

महाराजा ने विसर्जन किया। वे लोग भी महाराजा को नमस्कार कर हर्ष प्राप्त करते हुए अपने अपने घर पर पहुँचे। राजा और रानी ने स्नान पूर्वक ऋषभ देव प्रभु की पूजा करके भोजन किया, और प्रजा जनों ने खुशी बताने के लिये उस दिन महारानी के पुनर्जन्म का महोत्सव किया।

मलयासुन्दरी और मलय कुमार का जन्म

पृथ्वी पर सर्वत्र चन्द्रमा की चाँदनी पसर रही थी। महाराजा वीरधवल महारानी चंपकमाला के महल में आकर आराम कर रहे थे। नजदीक में रहे हुए बगीचे से शरीर को सुख देने वाले मन्द मन्द सुगन्धित पवन के झोंके आ रहे थे। शय्या पर बिछाये हुए पुष्पों की सुगन्ध महक रही थी। सारे महल में शान्ति का साम्राज्य पसर रहा था। उस समय विरह की वेदनायें नष्ट होजाने से दम्पती अपूर्व सुख सागर में डूब रहे थे। बहुत समय तक प्रेम और हास्य विनोद की बातें कर परिश्रम से थके हुए महाराज और महारानी सुख निद्रा में विलीन हो गये।

पुण्य के प्रभाव और मलयदेवी के वरदान से महारानी चम्पकमाला ने उस रात्रि में गर्भ धारण किया। ज्यों - ज्यों गर्भ के चिन्ह विशेष प्रगट होने लगे त्यों त्यों राजा हर्ष से पुलकित होने लगा और महारानी गर्भ के नियमों को पालन करती हुई सुख पूर्वक दिन बिताने लगी। गर्भ में उत्तम प्राणी आने के कारण रानी की शुभ इच्छायें पैदा हुई! और राजा ने भी उन सब की पूर्ति की।

क्रमशः

तित्थयर वर्ष २३
अप्रेल ९९ से सितम्बर ९९
निबन्ध

क्र. सं.	लेखक	लेख	पृ. सं.
१.		सम्पादकीय	५
२.	लता बोथरा	संस्कृति का आदि स्रोत -जैन धर्म	९
३.	श्री भरत हंसराज शाह	श्री अष्टापद जी -एक संभावना	४१
४.	मुनि महेन्द्र कुमार जी प्रथम	जैन धर्म की प्राचीनता	४९
५.	अनुवाद - श्री भंवरलाल नाहटा	अष्टापदगिरि - कल्प	६३
६.	मुनि श्री विद्यानन्दजी महाराज	मोहन - जो- दड़ो :	६९
	जैन परम्परा और प्रमाण		
७.	डा. श्री रंजन सूरिदेव	ऋषभनाथ की तीर्थयात्रा	८२
८.	विदेशों में जैन धर्म	डा. ज्योति प्रसाद जैन	१०५
९.	डा. रमेश चन्द्र शर्मा	मथुरा के जैन साक्ष्य	१०९
१०.	डा. रामकुमार जैन	ऋषभदेव तथा शिव -सम्बन्धी	१२२
	प्राच्य मान्यताएँ		
११.	क्या ऋषभदेव,	डा. राजीव कुमार जैन	१५५
	पुरी के जगन्नाथ है?		
१२.	जैन धर्म का प्रसार	श्री के. रिषभ चन्द्र	१६२
१३.	संकलन		१८९

तित्थयर वर्ष २३
अक्टूबर ९९ से मार्च २०००

निबन्ध

क्र. सं.	लेखक	लेख	पृ. सं.
१.	श्री भंवरलाल नाहटा	धातुमय जैनप्रतिमाएँ	५,३६, ६९,९८
२.		श्रावक के दैनिक कृत्य	१६,४६
३.		धर्म का प्रभाव	२५
४.	उपा. मुनि श्री कामकुमार नन्दीजी महाराज	भगवान् महावीर स्वामी का निर्वाण एवं प्रकाश पर्व दीपावली	७८
५.	डॉ. मुकुलराज मेहता	जैन धर्म में पुण्यम्पापतत्व	८२
६.		दश धर्मामृत बिन्दु	१०३
७.	डॉ. शिव प्रसाद सिंह	रुद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश	१०७,१२६
८.		हिंसा की मानसिकता इस सदी की सबसे बड़ी चुनौती है।	१०९
९.	श्री कुन्दनलाल जैन	देव निर्मित (वोद्वेथूभे) जैन स्तूप	१३३

कथानक

१०.		मलयासुन्दरी चरित्र	५७,८८, ११६,१३७
११.		संकलन	१२०,१५०

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 2471833

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 2378841
(R) 475-9712/2807

IN THE MEMORY OF PRABHAT NAHATA
PRADIP NAHATA
139/C/4 Anand Palit Road, Calcutta - 700 014
Phone : 2445839

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph. : (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 236-2210

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SMT. ANGOORI DEVI SINGHI
'SINGHI PARK'
48/3 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 4642851/3511

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and Cables.
THENWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph. (O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile : 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street
2nd Floor, Calcutta -700 007
Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row
3rd Floor, Room no. 14
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Phone -Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile : 98 3102 8566
Resi : 355-9641/7196

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072
Ph : 215-1297, 236-4230/4240

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

In the memory of—
HARAKH CHAND NAHATA
Lalit, Pradeep, Dilip Nahata
21, Anand Lok, August Kranti Marg
New Delhi - 110 049
Ph: Resi. 625-1065/7653/6089
Off : 338-1735/5923

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta-69
Phone : 248-1533, 248-0046

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J. L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

SIDDHA NIKETAN
Golden Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 229 5047, 9110

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

NARENDRA JAIN
Super Iron Foundry
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 651-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321
(Resi) 554 1289

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248 8576/0669/1242
Resi - 225 5514, 237 8208, 229 1783

DHARAM CHAND SARAOGI SMRITI NYAS
'Jain House'
8/1 Esplanade East
Calcutta - 700 069

IN THE MEMORY OF VIJAY SINGH BADER
Ratan Bader, Sudarsan Bader
26, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013, Phone :

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Phone : 239 6205/9727

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

FORT GLOSTER INDUSTRIES
31 Chowranghee Road, Calcutta - 700 016
Ph : 2462289 (Direct), 2498243/44/45
2490846,2454242, 2469551
Resi- 4553632/4399, Fax : (91) 033-2495665
Gram : gloscab, E-mail : gloster ho @ sms
sprintrgg ems V.S.N.L. Net in

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 235 7312, Shop : 230 1180
Resi : 241 6831

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 2355009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700007
Phone : Shop 230 0216, (R) - 2359657/9312

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 2387764, (R)6664541, 5309286

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta-700 007
Ph : Shop-242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta-700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta-700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D.C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta-700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta-700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta-700 007

LILY SUKHANI
7 Bright Appartment, Flat No- 7C
7 Bright Street, Calcutta - 700 019
Phone : 287 0448.

PARK PLACE HOTEL
'Singhi Villa'
49/2 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 475 9991/92/7632.

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Phone : 2352076, 2355701

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED
Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta-700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax : + 91-33-245-7591
Telex : 021-2101 GANG IN
Phone : 226-0881, 226-0883, 226-6283, 226-6953

Mill :

BANSBERIA
Dist : HOOGHLY
Pin-712 502
Phone : 6346441/6446442
Fax : 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।
Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

**Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 569208/563276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi-110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsnl.net.in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी ।"

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.

Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P.O. Azimganj, Pin - 742122
Dist : Murshidabad
Phone : Code : 03483 No. : 53232
Cal. Phone No. : 033 2300432, 5213863

With Best Compliments...

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven design time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer from 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE : 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-2259484/2263236

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
WB/NS-330
Vol. XXIII No. 12 TITTHAYARA March 2000
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225